Name - Chandan Kumar

College Name - Shakuntalam Institue of Teacher's Education, Sasaram Rohatas - 821115

Subject Name - [समाज शिक्षा और पाठ्यचर्या की समझ - (F1)]

Unit - 5

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE : / /20
PAGE :

2. दार्शनिक आधार :- हमारे जीवन अथवा शिक्षा के उद्देश्य मूलतः हमारे जीवन दर्शन पर आधारित होते हैं। अतः शिक्षा की पाठ्यचर्या भी दर्शन से प्रभावित होनी चाहिए और होती भी है। जैसे- ज्यों अध्यात्मवादी दार्शनिक मानव जाति के अध्यात्मिक अनुभवों को अधिक महत्व देते हैं इसलिए वे पाठ्यचर्या में भाषा, साहित्य, धर्मशास्त्र, नीतिशास्त्र को विशेष महत्व देते हैं जबकि विपरीत भौतिकवादी दार्शनिक भौतिक जगत को ही सत्य मानते हैं और भौतिक सुखों की प्राप्ति के हेतु पाठ्यचर्या में भौतिक विज्ञान को प्रमुख स्थान देते हैं। परियोजनवादी न तो शिक्षा के उद्देश्य निश्चित करते हैं और न ही पाठ्यचर्या। उनका स्पष्टीकरण है कि मनुष्य की परिस्थितियाँ हमेशा बदलती रहती हैं। अतः वे पाठ्यचर्या में सामाजिक विषयों एवं क्रियाओं को उनकी तत्कालिन उपयोगिता के दृष्टि से स्थान देते हैं।

3. समाजशास्त्रीय आधार :- शिक्षा की पाठ्यचर्या निश्चित करने में दर्शन के बाद समाज विशेष की संरचना उसकी संस्कृति तथा धार्मिक एवं आर्थिक राजनैतिक स्थिति का प्रभाव पड़ता

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

है। उदाहरण के लिए जिस समाज में पुरुष और स्त्रियों का कार्य भिन्न होता है उसमे स्त्रियों की शिक्षा के पाठ्यचर्या पुरुषो के पाठ्यचर्या से भिन्न होता है और जिन समाजो में पुरुष और स्त्रियों में इस प्रकार का कोई भेद नही होता है उसमें स्त्री - पुरुष दोनो के लिए समान पाठ्यचर्या होता है। पाठ्यचर्या का निर्माण समाज के मूलभूत आवश्यकताओ को ध्यान में रखकर किया जाता है

4. राजनैतिक आधार :-

वर्तमान में किसी भी देश में शिक्षा का व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व माना जाता है तब उसके उद्देश्य एवं पाठ्यचर्या का राज्य द्वारा प्रभावित होना स्वभाविक है। जैसे - साम्यवादी समाजो की शिक्षा के पाठ्यचर्या की अपेक्षा लोकतंत्रीय समाजो की शिक्षा के पाठ्यचर्या अधिक विस्तृत एवं लचीली होती है।

5. वैज्ञानिक आधार :-

आज विज्ञान का युग है मनुष्य का पुरा जीवन विज्ञान से प्रभावित है। उसके हर कार्य में विज्ञान

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

की दखल है। विज्ञान ने उनको कम श्रम से अधिक उत्पादन करने में समर्थ किया है। हमारी शिक्षा की पाठ्यचर्या भी आज इससे प्रभावित है। हम उसमें ऐसे तथ्यों को स्थान नहीं देते जिन्हें बिना अनुभव के स्वीकार करना पड़े। इस प्रकार आज विज्ञान भी पाठ्यचर्या निर्माण का आधार माना जाता है।

6. मनोविज्ञानिक आधार :— शिक्षा किसी की किस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए किन विषयों का ज्ञान और किन क्रियाओं का प्रशिक्षण आवश्यक है यह तो दर्शनशास्त्री और समाजशास्त्री निश्चित करते हैं लेकिन किस स्तर के बच्चे उसे किस सीमा तक ग्रहण करेंगे यह मनोविज्ञान में बच्चों के शारीरिक मानसिक और सामाजिक विकास का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन के अभाव में हम यह नहीं निश्चित कर सकते हैं कि किस स्तर के बच्चों को क्या सिखाया जाए।

Scanned with CamScanner
Scanned with CamScanner

DATE : / /20
PAGE :

* पाठ्यविवरण (sylabus) का अर्थ :-

पाठ्यविवरण (sylabus) वह होता है जिसमें पाठ्यचर्या के रूपरेखा के साथ साथ उससे संबंधित पाठ्यपुस्तकों के नाम शामिल रहता है। पाठ्यविवरण छात्रों के लिए एक दिशानिर्देश करता है। अर्थात् इस sylabus से छात्रों को पाठ्यक्रम पुरा करने का आधार मिल जाता है कि ~~कौन~~ पुस्तक को कितने दिन में खत्म किया जाए, कैसे पढ़ा जाए, इसमें परिक्षा के लिए कितने प्रश्न पुछे जायेंगे और किस टॉपिक से कितने अंक का प्रश्न पुछे जायेंगे इन सारी बातों का पता चल जाता है जिससे छात्रों को पढ़ने में आसानी होती है। प्रत्येक विषय का sylabus अलग अलग रहता है। sylabus के द्वारा छात्रों को यह भी जानकारी हो जाती है कि कितने अंक की परिक्षा मौखिक होगी और कितने अंक का लिखित।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner